5 P. M.

THE BUDGET (NAGALAND), 1975-76.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU): .v i Hranab Mukherjee.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI PRANAB MUKHERJEE) : Sir, ! beg lo lay on the Table a statement of the estimated receipts and expenditure of the State of Nagaland for the year 1975-76.

THE APPROPRIATION BILL, 1975
contd

श्री रणवीर सिंह : उपाध्यक्ष जी, मैं इस वित्तीय बिल का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं । इसके साथ-साथ मैं यह जानता हूं कि यह चालू वर्ष बहुत कठिनाई का वर्ष था देश के लिए । इसके साथ-साथ यह जानते हुए भी मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि इस देश के अंदर एक तो वे भाई हैं जो पैदा करते हैं, मेहनत करते हैं, गर्मी और सर्दी में काम करते हैं और उसके बाद अन्न, कपड़े के लिए कपास या दूसरी चीजें देश के लिए पैदा करते हैं और दूसरी तरफ वे भाई हैं जो इस्तेमाल करते हैं जिनको महंगाई भत्ता मिलता है, जिनको तनख्वाह मिलती है । हम देश के किसी भाई को भी भूख से नहीं मरने देंगे । मुझे खुशी है कि पिछले 27 वर्षों में किसी को भी भूख से नहीं मरने दिया गया इस देश के अंदर जिस देश में आजादी से पहले हर पांचवें साल कहत के कारण हजारों-लाखों की जानें जाती थीं ।

उपसभाध्यक्ष जी, इस के साथ-साथ यह मानना होगा कि इस साल के अन्दर 500 करोड़ रुपये से अधिक का अनाज विदेशों से इस देश के अंदर लाए ताकि किसी को तकलीफ न हो । तीन सौ करोड़ रुपये की सबसिडी, अनुदान दी 295 और 300 करोड़ में कोई फर्क नहीं है, ताकि सस्ता अनाज उनको दिया जा सके महंगाई भत्ते के मेरे पास आंकड़े नहीं हैं लेकिन एक आंकड़ा मुझ को याद है जब कि रेल मंत्री जी ने बतलाया था कि इस अकेले साल के अन्दर तनख्वाह और दूसरी चीजों के अन्दर रेल के मुलाजिमों के लिए 200 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी की गई । हमें इस बात से कोई एतराज नहीं । देश के अन्दर हर गरीब आदमी, हर भाई जो भी देशवासी है उसकी जरूरत पूरी होनी चाहिए लेकिन उसका कोई संतुलन होना चाहिए ।

एक तरफ इस देश के अन्दर उपभोक्ताओं के लिये अनाज के लिए सबसिडी 295 करोड़ रुपये दी है और दूसरी तरफ इस देश के अंदर जितनी नहरें हैं उन पर भी पैसा खर्च होता है । अभी गौरे साहब ने कहा कि बिजली सस्ती देनी चाहिए । मैं बताना चाहता हूं कि स्टेट इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड ब्याज तक अदा नहीं कर सकता, पूरा खर्चा तक नहीं दे सकता तो कैसे बिजली सस्ती हो सकती है ! पानी सिंचाई के लिए जो प्रोजैक्ट बने हुए हैं उन पर देश के अंदर डेढ़ सौ करोड़ रुपये का घाटा साल के अंदर पड़ता है जब कि अमरीका के अंदर सिंचाई साधन बढ़ाने के लिए जो पैसा लगाया जाता है उसके ऊपर कोई ब्याज नहीं लिया जाता । रूस के अंदर तो कोई ऐसी बात हो ही नहीं सकती है, वहां तो ब्याज का कोई जिक्र ही नहीं है । मुझे याद है भाखड़ा के ऊपर डेढ़ सौ करोड़ रुपये का खर्च आया था और आज के भाव से अगर वह बनाना हो तो 500 करोड़ रुपये का बनेगा । आज भी आर्थिक विशेषज्ञ इसको घाटे का सौदा कहते हैं बावजूद इसके कि हिन्दुस्तान का गेहूं 60-70 फीसदी वहां से पैदा होता है, जो चावल है वह 60-70 फीसदी वहां से पैदा होता है लेकिन आर्थिक विशेषज्ञ तब भी उसको घाटे का सौदा बताते हैं ।

गौरे जी हमने सुना था कि ए० पी० सी० की गोली होती है और वह

इस देश के अंदर सिर दर्द की तकलीफ़ या दूसरी जगहों की तकलीफ़ की दूर के लिए इस्तेमाल होती है । एक यह जो ए० पी० सी० की गोली निकली है यह देश को तकलीफ़ पहुंचाती है और देश को बनाने वालों को तकलीफ़ पहुंचाती है और आप चाहते हैं कि हम उसकी प्रशंसा करें ।

श्री एन० जी० गोरे : हम प्रशंसा के लिए नहीं कह रहे हैं हम डिस्कशन के लिए कह रहे हैं । I say, discuss it. That is your own version,

श्री रणबीर सिंह : जिनसे सस्ता अनाज दिलाते हैं, जिनसे सस्ती कपास दिलाते हैं उनको कपास खरीदने के लिए पैसा देने के लिए सरकार को सलाह नहीं देते हैं। सस्ता अनाज बिके, 105 रु० क्वींटल अनाज बिके, यह बात सब कहते हैं, लेकिन किसान की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता है । आज हमारे देश में हालत यह है कि जो गरीब आदमी है, जिनको कुलक के नाम से बदनाम किया जाता है, उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता है। मैं पूछना चाहता हूं कि 18 एकड़ या 12 एकड़ जमीन वाला आदमी क्या कुलक कहा जा सकता है ? श्री गोरे ने इस बात पर आशंका प्रकट की कि सारे मुख्य मंत्री जो गेहूं पैदा करते हैं उन्होंने इसकी मुखालफत की है और दूसरी तरफ यह हालत है कि ए० पी० सी० की गोलियों के लिए इधर के या उधर के सदस्यों ने उनकी निन्दा की है और यह भी कहा है कि हमें गेहूं मिलेगा भी या नहीं मिलेगा। मैं एक ही बात कहना चाहता हूं कि हमारे देश को आजाद हुए 27 वर्ष हो गये, हिन्दुस्तान के अंदर जो शासन चला उसमें सबसे ज्यादा मध्यम वर्ग का खयाल रखा गया है, उनकी बात मानी गई । रेल का पहिया जाम करने का सवाल हो या हवाई जहाज का चलाना बन्द करने का सवाल हो, या पांच हजार रुपये जिनकी तनख्वाह है उनका सवाल हो, हमदर्दी हमारे विरोधी दलों की हमेशा 12 सौ या 17 सौ रुपये महीना तनख्वाह पाने वालों की तरफ ही रहती है । हमारे देश का किसान भाई जो गर्मियों के दिनों में खेतों में काम करता है, उसकी तरफ बहुत कम ध्यान दिया जाता है । गोरे जी, आप अगर दिसम्बर के महीने के अन्दर जब कि ठंड हो, बर्फ जमी हुई हो और रात का समय हो और आपको खेत को पानी देना पड़े तो आपको किसान के परिश्रम का अनुमान हो जाएगा कि कितना खून-पसीना बहा कर वह काम करता है । ऐसे किसान के लिए यहां पर कुलक लोबी या व्हीट लोबी या गन्ना लोबी का नाम दिया जाता है । दुनिया के अन्दर रूस को छोड़कर जितने भी देश हैं और जिन देशों ने तरक्की की है उनमें मध्यम वर्ग की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया है एक हमारा देश है जहां उनका हित देश का हित माना जाता है । किसान का उतना ध्यान नहीं रखा जाता है जितना रखा जाना चाहिए । मध्यम वर्ग के लिए शराब चाहिए और उनके लिए ही 105 रु० क्वींटल गेहूं की कीमत रखी जा रही है । आप जानते हैं कि इस देश के अन्दर जो विदेशी कर्जा है वह सात हजार करोड़ रुपये है । यह सात हजार करोड़ रुपये विदेशों से अनाज मंगाने पर खर्च किये गये और काटन मंगाने पर खर्च किया गया । आज कहा जाता है कि देश के अन्दर अनाज की पैदावार बढ़ाई जाये । उप-सभाध्यक्ष महोदय, मैं बारबार निवेदन करना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के किसान ने इतना गेहूं पैदा किया है कि

[श्री रणवीर सिंह]

देश के अन्दर उसको खरीदने वाला कोई नहीं मिला और हिन्दुस्तान के किसान ने इतना कपास पैदा किया है कि बाहर से हमें कपास मंगाने की जरूरत कभी न पड़े । आज हालत यह है कि हिन्दुस्तान के बैंक भी उसको खरीदने के लिये पैसा नहीं देते हैं । हिन्दुस्तान के किसान ने इतना गन्ना पैदा किया कि आज भी एक करोड़ रुपया गन्ना उत्पादकों को नहीं मिला है और बकाया है । मैं कहता हूं कि क्या हमारे देश के लोग कभी इस बात पर विचार करेंगे कि किस तरह से गांवों की हालत को सुधारा जाय ? यहां पर कहा जाता है कि 105 रु० क्वींटल गेहूं का दाम सही है । यहां तक भी पहले तमाम विरोधी दलों की तरफ से कहा गया था कि 75 रु० या 76 रु० का दाम भी ज्यादा है और करनाल के अन्दर जब हमारे विरोधी दल के नेता लोग गये तो कहने लगे कि इस भाव पर किसानों को लूटा जा रहा है । यह बात कब तक चलेगी । यह दो-तरफा बात, दो तरह की कहानियां कब तक चलेगी ? अहिंसावाद के नाम पर चाहे वह बड़े लोग हों चाहे छोटे लोग हों, उन्होंने देश के लिए कुर्बानी भी की हो लेकिन अपना बाप भी पागल हो जाए तो उसे पागलखाने भेजना पड़ता है । किसी को भी इस बात की रियायत नहीं हो सकती है कि जिस बाप ने पैदा किया है वह अपने बच्चों को कत्ल करने लगे । हम उन्हीं में से हैं जिन्होंने हिन्दुस्तान को आजाद कराया हमने भी देश की आजादी के लिए जेल काटी है, लेकिन अगर कल हम इस देश को तबाह करने की तरफ ले जाने लगें, किसी को काम न करने दें, तो उसके बारे में हमें सोचना पड़ेगा । मैं तो शुक्रिया अदा करता हूं इन्दिरा गांधी का और मैं महसूस करता हूं—मैंने पण्डित जवाहरलाल नेहरू के साथ 15 साल तक रह कर देखा, त्यागी जी उस समय मंत्री होते थे, त्यागी जी अगर ऐसा आड़े वक्त होता जैसा आड़े वक्त से हम गुजरे हैं तो इस हिन्दुस्तान का कोई नेता काम नहीं चला सकता था और जिस वक्त आप मंत्री होते थे किसी ने रेल का पहिया जाम करने की कोशिश नहीं की, किसी ने हवाई जहाज चलाना बंद नहीं किया . . . (*Time bell rings*) . . . और अगर करते थे तो उनके साथ किसी की हमदर्दी नहीं थी; आज जो देश के काम को रोकना चाहते हैं उनके साथ हमदर्दी है और जो ऐसे वक्त में देश को बना रहा है उनको कहते हैं कि इस देश का सत्यानाश कर दिया—और सभाध्यक्ष जी, मैं कुछ आंकड़े देना चाहता हूं, उससे जरा इस बात को सोचें कि जब से प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी प्रधान मंत्री बनी हैं इस देश को बनाने की तरफ कितना कदम आगे बढ़ा है ? कई बातें कही जाती हैं कि छोटे-छोटे कारखाने लगे, छोटी सिंचाई योजनाओं पर ज्यादा रुपया दिया जाए । जब से प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी बनी हैं, बड़ी सिंचाई योजना के मुकाबले में छोटी सिंचाई योजनाओं के ऊपर ज्यादा खर्च हुआ है । जिस वक्त वे प्रधान मंत्री बनी ही थीं तब हिन्दुस्तान के सिर्फ 75,000 गांवों के अंदर बिजली थी, आज डेढ़ लाख से ज्यादा गांवों में बिजली है ; जब वे प्रधान मंत्री बनी थीं कुल 10 लाख पम्पिंग सेट ऐसे थे जो बिजली से चलते थे, आज 25 लाख से ज्यादा पम्प बिजली से चलते हैं । हम बड़ी आर्थिक सिद्धांतों की बातें सुनते हैं और जितना ज्यादा जो भाई आर्थिक

सिद्धांत रखते हैं मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि बिहार जैसा इलाका जहां कुदरत ने इतने अच्छे साधन दिए हैं, जहां पर जयप्रकाश जी ने तमाम जगहों में ग्राम-दान दिलाया, तमाम बिहार के अंदर भूमिदान दिया गया, लेकिन बिहार के एक गांव की जमीन की समस्या को हल नहीं कर सके और वह जयप्रकाश जी जिनके नेतृत्व के तहत आज तमाम विरोधी दल व पार्टियां इक्ट्ठी होती हैं, मैं उनसे पूछना चाहता हूं जरा मेहरबानी कर के एक ही बात कर दो--ये 25 भाई विरोधी दल के, इनको इक्ट्ठा बैठा दो । देश के लोगों ने तमाम को तो कांग्रेस के टिकट पर जिता कर लोक सभा में भेजा नहीं हैं, काफी सदस्य हैं, जो कांग्रेस के मेम्बरों को, उम्मीदवारों को हरा कर आए हैं, उन हिन्दुस्तान के 50-60 सदस्यों को भी आप इक्ट्ठा नहीं कर सकते, पचास सदस्यों को भी इकट्ठा बैठा नहीं सकते, तो क्या इस देश का कल्याण करेंगे ? वह तो इस देश के अंदर स्ट्राइक कराएंगे जिसके नतीजे के तौर पर ललित नारायण मिश्र जिन्होंने पंजाब और हरियाणा के गेहूं को रेल से हिन्दुस्तान के कोने-कोने में पहुंचाया ताकि कोई आदमी भूख से न मरे ; जिसने हिन्दुस्तान के बहादुर लड़ाकू फौजियों के वास्ते अनाज पहुंचाया, हथियार पहुंचाया उनका कत्ल हुआ । फिर उसका उपहास करते हैं । इन्दिरा गांधी आज हिन्दुस्तान को बनाने में लगी हैं और उसके बारे में त्यागी जी, मैं आंकड़े देना चाहता था । जो देश की तरक्की के लिए 65-66 में कर्जा दिया गया वह कुल 5379.57 करोड़ रुपया था और आज 1975-76 में जो कर्जा दिया गया है वह 15307.05 करोड़ रुपया है । इसी तरह से अगर देखा जाय तो हमारे देश के अन्दर जो सरकारी कंपनियां हैं उनके ऊपर जो पैसा लगा हुआ है वह 1965-66 में 1797.82 करोड़ लगा था और इस साल के आखिरी तक वह 5605.21 करोड़ हो जायगा ।

यही नहीं रेलों के ऊपर जो देश में 70 लाख रोज लोगों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है, अनाज ले जाती है, लोहा ले जाती है और दूसरी वस्तुएं ले जाती है और दूसरी किस्म की यातायात की जिम्मेदारियां पूरी करती है, जब वे 1966 में प्रधान मंत्री बनी थीं तो उसमें 2672.02 करोड़ रुपया लगा था और इस साल के आखरी में 4289.23 करोड़ रुपया लगा हुआ है । आज हम उस बहिन को कोसते हैं जिसने इस देश की आड़े वक्त रक्षा की थी, इस देश का नाम ऊंचा किया था, इस देश को हमलावरों से बचाया था और दुश्मनों के ऊपर जीत हासिल की थी । जब पाकिस्तान ने पूर्वी बंगाल पर अत्याचार किये थे तो वहां पर करीब एक करोड़ शरणार्थी हमारे देश में आ गये थे । उस समय हमारे विरोधी भाई यह कहते थे कि ये लोग वापस नहीं जायेंगे । जिस तरह से पश्चिमी पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थी पाकिस्तान वापस नहीं गये, उसी तरह से ये लोग भी पूर्वी पाकिस्तान नहीं जायेंगे । लेकिन हिन्दुस्तान ने अपने देश के लिए एक नया इतिहास बनाया और सारे शरणार्थी सम्मान के साथ अपने अपने घरों को वापस चले गये । यह 1971 की बात है और आज हमारे देश में विरोधी भाईयों द्वारा एक नया वायुमंडल तैयार किया जा रहा है, बनाया जा रहा है ताकि जिसने इस देश को बनाया है उसको ही हटा दिया जाय । इन लोगों ने चुनाव द्वारा ताकत अजमा ली है और जब यह देख लिया है कि चुनाव के द्वारा नहीं हटाया

[श्री रणवीर सिंह]

जा सकता है तो अब गोली से हटाने की बात करने लग गये हैं । हमारी नेता अपनी चुनाव याचिका के लिए जब अदालत के सामने गई तो वहां पर एक आदमी पिस्तौल लेकर जाता है जिसके बारे में हमारे राजनारायण कहते हैं कि उसका बाप तो कांग्रेसी था । मैं यह पूछना चाहता हूं कि ये भी तो पहिले कांग्रेसी ही थे । कांग्रेस के बाद ये पी० एस० पी० में गये और उसके बाद एस० एस० पी० में गये । एस० एस० पी० के बाद बी० के० डी० में गये और अब ये बी० एल० डी० में चले गये है और कुछ समय के बाद किस पार्टी में जायेंगे यह तो भगवान ही जानता है । मैं नहीं समझता हूं कि चौधरी चरण सिंह यह चाहते होंगे कि हमारे देश में स्ट्राइक हो और बच्चे स्कूलों में न जायें । मैं नहीं समझता हूँ कि चौधरी चरण सिंह यह चाहते होंगे कि उनकी पार्टी के लोग इस तरह की कार्यवाही में शामिल हों । लेकिन कुछ लोग हमारे देश में इस तरह का वातावरण बना रहे है, तो मैं उनसे यही कहना चाहता हूं कि भगवान उनको सद्‌बुद्धि दे ताकि वह अपनी बुद्धि को देश की तरक्की के कामों में लगा सके । मेरा तो यह कहना है कि ये लोग जब 51 सदस्यों को एक साथ नहीं बिठला सकते है, तो वे देश की तरक्की के लिए क्या काम कर सकेंगे । त्यागी जी वहां पर बैठते थे जब कि वे कांग्रेस से चुने गये थे और उस समय विरोधी दल बना था । वहां पर कांग्रेस से चुने हुए कांग्रेसी श्री रामसुभग सिंह ने लोक सभा में विरोधी दल बनाया था । संविधान में विरोधी दल के बनाये जाने की व्यवस्था है, लेकिन इन 26 सालों में उनका कोई भी नेता नहीं बन सका है । ये लोग केवल उपहास करने की बात जानते हैं और कोई देश की भलाई की बात करना नहीं जानते हैं, किसी मकान को बनाना एक बड़ा मुश्किल कार्य होता है, किसी कारखाने का चलाना भी एक मुश्किल कार्य होता है और रेलों का चलाना भी एक मुश्किल कार्य होता है जब कि उसमें विरोधी दलों द्वारा हड़ताल कराई जाय । इस तरह से इन्दिरा गान्धी ने इन सब मुश्किलात का मुकाबिला करते हुए देश को आगे बढ़ाया और बढ़ाते ही ले जा रही है । आज कुछ लोग मोनोपली हाउसेज की बात करते है । तो मैं उनसे कहना चाहता हूं कि ये लोग बाहर तो नहीं जायेंगे, अपने देश के अन्दर है और जिस दिन हम चाहेंगे उसी दिन यह मोनोपली खत्म हो जायेगी । इसलिए आज हमें अपने देश को हर तरह से आगे बढ़ाना है । वित्त मंत्री जी जो बिल लाये हैं अगर उसमें सब बातें शामिल नहीं है, फिर भी हमें अपने देश को आगे बढ़ाना है । इसके अन्दर चीजों की कमी को दूर करने की भावना है । मैं मानता हूं कि इस साल के अन्दर हम कामयाब होंगे । इसीलिए इनको घबड़ाहट है कि हम कामयाब न हो जायें । इनकी उल्टी कोशिशों के बावजूद हम कामयाब हो रहे हैं ।

SHRI N. G. GORAY : We have heard a wonderful speech on the Appropriation BUI.

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS FOR EXPENDITURE OF THE GOVERNMENT OF NAGALAND FOR THE YEAR 1974^75

THE MINISTER OF STATE-IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI PRANAB MUKHERJEE) : Sir, 1 beg to lay on Hie T;iblc a statement showing the SuppUi,-)«.ni;iry Demands (March, 1975) for Grants for Expenditure of the Government ofNagaland lor ihc yeai 1974-75.